साई सुधा

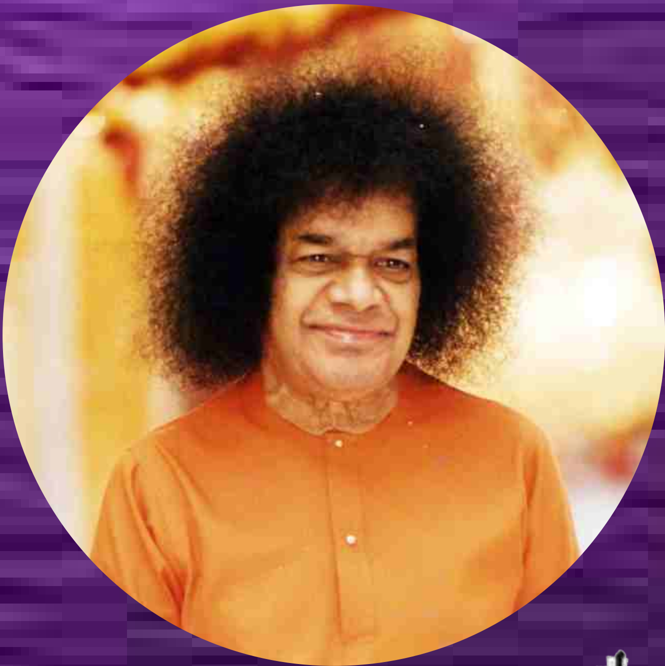

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन
गणेश वड सिसोद्रा, ने.हा.–८, नवसारी

Website : www.sssvn.edu.in

Publisher :	**प्रकाशक :**
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन
Ganesh Vad, Sisodara	गणेश वड सिसोद्रा,
N.H.No -8 Navsari, Gujarat.	ने. हा. नं -८, नवसारी, गुजरात
Ph : 02637-291030,	दूरभाष : ०२६३७-२९१०३०
Website : www.sssvn.edu.in	वेबसाईट : www.sssvn.edu.in
Editors :	**संपादक :**
Akhilesh Kumar Tiwari	अखिलेश कुमार तिवारी
(Hindi Co-Ordinator)	(हिन्दी प्रभारी)
Hindi Teacher - (Secondary)	हिन्दी शिक्षक – (माध्यमिक)
Dinesh Prajapati / Yogesh. A.Patel	**दिनेश प्रजापति / योगेश ए. पटेल**
Hindi Teacher	हिन्दी शिक्षक
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन
Navsari	नवसारी
Support :	**सहायक मंडल :**
Hindi Department	हिन्दी विभाग
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन
Navsari	नवसारी
© Copy Right :	**© सर्वाधिकार सुरक्षित :**
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन
Navsari, Gujarat	नवसारी, गुजरात.
Fifth Edition :	**पाँचवा संस्करण :**
Diwali 11 November, 2015	दीपावली, ११ नवम्बर, २०१५
Price : Rs. 125/-	**मूल्य :** रु.१२५/-
Graphics & Printers :	**ग्राफिक्स एवं प्रिन्टर्स :**
Rangoli Graphics, Navsari	रंगोली ग्राफिक्स, नवसारी
Ph : (02637) 283183	फोन : (०२६३७) २८३१८३
rangoligraphics83@gmail.com	rangoligraphics83@gmail.com

समर्पण

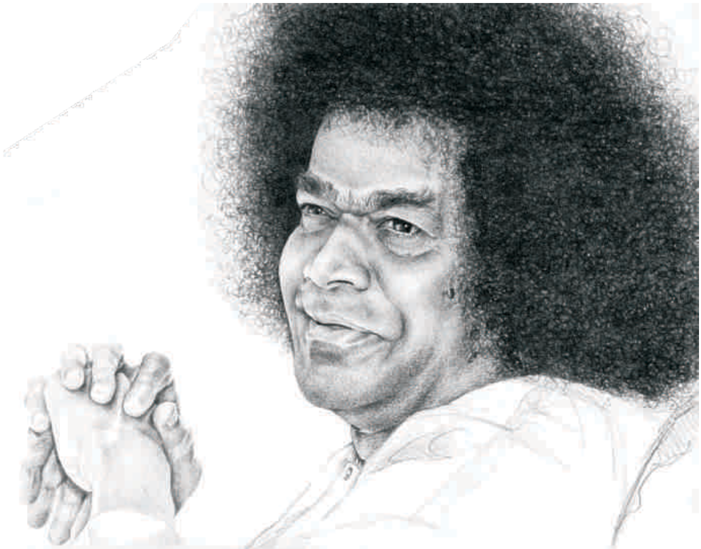

भगवान श्री सत्य साई बाबा के
चरण कमल में समर्पित

अर्पण

मनुष्य की पहचान उसकी भाषा से होती है । भाषा द्वारा मनुष्य चारों तरफ एक छोटा सा घर बनाता है, और स्वयं उसके मध्य में रहता है । प्रत्येक व्यक्ति भाषा के माध्यम से अपने इर्द–गिर्द विचारों, मान्यताओं, विश्वासों और कल्पनाओं को प्रकट करता है । इसी दौरान इंसान के जीवन में भाषा का अनन्य एवं अकल्पनीय प्रभाव सृजित होता है । भारतीय संविधान में उन्नीस राज भाषाओं का प्रावधान है, जिसमें हिन्दी भी एक भाषा है, और यह हमारी राष्ट्रभाषा भी है । यह आश्चर्य लगता है कि ' **राष्ट्रभाषा** ' अभी तक ' **राजभाषा** ' के पिंजरे में कैद होकर रह गया है । यह भी सच है कि ' **वैश्वीकरण** ' की दुनिया में हिन्दी भाषा का प्रचार एवं प्रसार विश्व भर में हो रहा है, लेकिन हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने में बहुत कम ही हाथ देखने को मिलता है । इस राष्ट्रीय चिन्ता को मन में रखते हुए हम **श्री सत्य साई विद्यानिकेतन** में लगातार राज्य स्तरीय कविता लेखन, चित्रकला (पोस्टर मेकिंग) एवं वाद–विवाद आदि कार्यक्रमों का आयोजन करते आ रहे हैं ।

इसी कड़ी में राज्य स्तरीय काव्य लेखन प्रतियोगिता में चयनित कुछ कविताओं का पाँचवा संस्करण ' **साई सुधा** ' के रूप में आपके समक्ष विद्यमान है । ' **साई सुधा** ' कविता संग्रह में कुल ५५ स्वरचित कविताएँ है । जिसमें इंसान से लेकर किसान की तरफ अपना काया विस्तार किया गया है । ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि ' **साई सुधा** ' पिछले चारों संस्करण से एक कदम और आगे बढ़ेगा और हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता रहेगा। आप सबका सहयोग, प्यार और मार्गदर्शन अपेक्षित है ।

धन्यवाद : साई राम

बी. एन. बिस्वाल
(प्राचार्य)
श्री सत्य साई विद्या निकेतन
नवसारी.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
१	गुरु की महिमा एवं महानता	१
२	गुरु की महिमा	२
३	गुरु की महिमा एवं महानता	३
४	गुरु की महिमा एवं महानता	४
५	गुरु की महिमा एवं महानता	८
६	गुरु की महिमा	६-७
७	गुरु की महिमा	८
८	गुरु की महिमा	९
९	गुरु की महिमा	१०
१०	गुरु की महिमा एवं महानता	११-१२
११	गुरु की महिमा एवं महानता	१३
१२	गुरु की महिमा एवं महानता	१४
१३	गुरु की महिमा एवं महानता	१५
१४	गुरु की महिमा एवं महानता	१६
१५	गुरु की महिमा एवं महानता	१७
१६	सत्य की शक्ति	१८
१७	सत्य की शक्ति	१९-२०
१८	सत्य की शक्ति	२१
१९	सत्य की शक्ति	२२-२३
२०	सत्य की शक्ति	२४
२१	सत्य की शक्ति	२५
२२	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	२६-२७
२३	कविता - किसान के उपकार	२८
२४	मेहनत व परिश्रम के अवतार किसान	२९-३०
२५	देश के विकास में मजदूर का योगदान	३१
२६	डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम	३२
२७	कविता-किसान के उपकार	३३
२८	गुरु की महिमा एवं महानता	३४

अनुक्रमणिका

क्रमांक	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
२९	गुरु की महिमा	३५
३०	गुरु की महिमा एवं महानता	३६
३१	सत्य की शक्ति	३७
३२	सत्य की शक्ति	३८
३३	सत्य की शक्ति	३९
३४	किसान	४०
३५	मैं मजदूर हूँ	४१-४२
३६	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	४३
३७	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	४४
३८	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	४५
३९	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	४६
४०	किसान की बातें किसान ही जाने	४७
४१	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	४८
४२	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	४९
४३	सेवा एवं परिश्रम के अवतार है मजदूर	५०
४४	एक किसान	५१-५२
४५	सेवा और परिश्रम के अवतार किसान और मजदूर	५३
४६	धरती का सच्चा बेटा - किसान	५४-५५
४७	सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान	५६
४८	सेवा एवं परिश्रम के अवतार मजदूर	५७
४९	मजदूर	५८
५०	आधुनिकता की होड़ में	५९
५१	जलो दीप जैसे	६०
५२	अतुल्य भारत	६१
५३	वर्तमान में हिन्दी भाषा	६२
५४	अखियों की भाषा	६३
५५	मैं तो चला इंसान की खोज में	६४

गुरु की महिमा एवं महानता

न्यारी है महिमा गुरु की,
मुझे जरूरत है जिसके आशीष की।
गुरु से ही सब कुछ पाया है,
गुरुके सहारे ही मैंने सब कुछ कमाया है।।

गुरु से ही सब कुछ सीखा है,
गुरु ने ही सबको सच्चा मार्ग दिखाया है।
गुरु ने ही अपने विद्यार्थी को बच्चा माना है,
और बच्चों को खुश करने के लिए बहुत सारे प्रयास किये हैं।।

कभी नींद लाई तो कभी मज़ा दिलाया,
परंतु ज्ञान वो सपने से भी बढ़कर।
और ज्ञान-ज्ञान में मुझे,
मेरे सपने तक पहुँचाया है।।

आपने कभी भेद-भाव नहीं किया,
फिर वह गरीब क्यों न हो।
आप हमारे लिए एक सच्चे मार्ग,
दिखाने की झलक हो ।।

आपने हम सब को एक बगीचे के,
फूल की तरह संभाला है।
जैसे एक माली उसके बगीचे के,
फूलों को पाल-पोस कर बड़ा करता है।।

गुरु आप महान हो आपके आशीर्वाद,
से मैंने ये सब कुछ कमाया है।
मेरी कामयाबी के पीछे भी आपका ही हाथ है,
धन्यवाद, गुरु जो आपने मुझे शिक्षित किया।।

``इसलिए मैं गुरु को लाखों में एक मानती हूँ ।''

खुशी भक्ता (९-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा

गुरू चरणों की महिमा न्यारी,
गुरु चरणों की महिमा है न्यारी,
चरणों पर जाऊँ बलिहारी,

राम कृष्ण अवतार है जितने,
राह दिखाई प्यार की सबने,
प्यारे है सब, है उपकारी,
गुरू चरणों की महिमा है न्यारी,

हरि कृपा से सत्गुरु,
सत्गुरु ने हरि मेल कराया,
वचन गुरू के हैं हितकारी,
गुरू चरणों की महिमा है न्यारी,

सेवा की मैं बेल लगाऊँ,
भक्ति के मीठे फल पाऊँ ,
हरी भरी हो ये फुलवारी,
गुरू चरणों की महिमा है न्यारी,

हरि 'हरजीत' भीत मन भाया,
जब से ये जीवन में आया,
दूर हुई मेरी विपदा सारी,
गुरू चरणों की महिमा है न्यारी।

सूरज सिंह (10-ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

हे गुरु, आप तो नीम की तरह हो,
भले ही कड़वी डाँट दे,
लेकिन जानो तो जीवन के लिए उपयोगी है।

हे गुरु, आप तो देव से भी बढ़कर हो,
ज्ञानियों के ज्ञानी हो,
तेरे महिमा की तो जय-जय उपकार है।

हे गुरु, आप तो वह चिड़िया हो,
जो दिखती नहीं है,
परन्तु उसे पाने के लिए सब लालची हैं।

हे गुरु, आप तो जीवनधारा हो,
जीवन की बढ़ती जिंदगी मे तेरा ही नाम है,
तेरे ज्ञान से ही मैंने ये सब पाया है।

हे गुरु आप तो बरसात हो,
जो ज्ञान को कोने - कोने बरसा रहे हो,
सबको ज्ञानी करते-करते हुए।

हे गुरु, आप तो प्यार का सागर हो,
जिसने अमीर - गरीब का भेद-भाव नहीं किया,
और नीच को ऊँचा बनाया है।

जानकी पेटल (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

गुरु के सानिध्य में संसार हम ही ने पाया,
उनके तप का वरदान हम ही ने पाया,

संसार चाणक्य चंद्रगुप्त भूल नहीं पाया,
ऐसे ऐसे गुरुवर ने इस भूमि को स्वर्ग बनाया,

भगवान ने खुद से भी ऊँचा उन्हें बनाया,
जिनके पद चिन्हों पर चल कर जीवन सफल बनाया,

खुद कुछ न पाके भी हमको,
अपना अनुभव बताया,

पहले संघर्षों को उन्होंने गले लगाया,
सीधा-सरल मार्ग बताकर हमको कर्म बताया,

अपनी बुद्धि के बल पर,
संसार को जीत दिखाया,

बूँद - बूँद के सागर भरकर भी,
कर्ज उनका रहेगा,
कितना भी ऊँचा उठे,
तो साथ उन्हें था पाया,
अपने हाथों का सहारा,
हमारे लिए लगाया,
हरपल मुश्किलों में उन्हें ही,
बँधी सफल एक डोरी,
जिसके कारण ही इस युग में भी उनकी
जय जयकार होगी।

अनीषा एच. पटेल (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

जिसने जानवर को इनसान बनाया,
उसे सही-गलत का ज्ञान कराया।

जिसने जीवन - पथ पर चलना सिखाया,
गिरने पर हाथ पकड़कर साथ निभाया।

जिसने संकट में भी हँसना सिखया,
हँसते-हँसते संकट का समाधान भी निकाला।

जिसने धैर्यता, चरित्र और संस्कृति सिखाई,
गलत रास्ते पर भटके तो पिटाई भी लगाई।

जिसने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए दिया जलाया
हार जाने के डर को दूर भगाया।

जिसने माता-पिता का कार्य निभाया,
उसे देख आदर से आज सिर झुकाया।

जिसने जिंदगी से अंधकार को नष्ट कर डाला,
उसी के चरणों ने हमें आज सन्मार्ग दिखाया।

जिसने हमें अपने आप से मिलाया,
उसकी महिमा एवं महान गुरु को प्रणाम है हमारा।

हेत्वी पटेल (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा

गुरु वही है जिसकी महिमा है अपार,
क्योंकि वो ले जाता है प्रकाश के आर-पार।

गुरु वही है जो देता है सही उपदेश,
और उसकी गाथा गाई जाए देश और विदेश।

गुरु वही है जो बदल दे इंसान को,
और वही बनाता है संत और भगवान को।

गुरु वही है जो सिखाता है करूणा और प्यार,
और जीवन में फैलाता है स्नेह की बौछार।

गुरु वही है जो कहता है बनो विवेकशील,
क्योंकि इसी से बनाता है जीवन कर्मशील।

गुरु वही है जो देता है त्याग का संदेश,
क्योंकि बिना इसके नहीं है कोई जीवन का उद्देश्य।

गुरु वही है जो कहता है लक्ष्य रखो एक,
और जब-तक ना हो जाओ सफल करते रहो प्रयास अनेक।

गुरु वही है जो सिखाता है अनुशासन,
क्योंकि बिना इसके नहीं हो सकता है किसी पर भी शासन।

गुरु वही है जो देता है जीवन की सीख,
और कहता है करोगे अच्छे कर्म तो रहोगे बिल्कुल ठीक।

गुरु वही है जो कभी मित्र तो कभी सखा बन जाए,
और हर मुश्किल को चुटकियों में हल कर जाए।

गुरु वही है जो दीपक बन खुद जल जाए,
और जीवन में रोशनी-सा जगमगाए।

गुरु वही है जिसे देखकर आदर से सिर झुक जाए,
और जीवन के हर पहलू में परछाई-सा साथ निभाएं।

भूल नहीं सकते आदिकाल के गुरूओं को,
जिन्होंने दिए बड़े-बड़े संतों और ज्ञानियों को।

भूल नहीं सकते गुरू वशिष्ठ और सांदिपनी को,
जिन्होंने दिए पुरूषोत्तम राम और कृष्ण को।

आज भी है चाणक्य का सर्वोच्य स्थान,
जिन्होंने दिया है राजनीति-सा ग्रन्थ महान।

कौन नहीं जानता गुरु रामदास और गुरु द्रोण को,
जिन्होंने बनाया छत्रपति शिवाजी और धनुर्धर अर्जुन को।

तो गुरु की महिमा शब्दों की सीमा से पार है,
नहीं बना है शब्द कोई जो उनका पूर्ण जानकार है।

अदिती माहेश्वरी (10)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

गुरु की महिमा

गुरु की महिमा न्यारी है,
अज्ञानता को दूर करके,
ज्ञान की ज्योति जलाई है,
गुरु की महिमा न्यारी है।

गुरूवर के चरणों में रहकर,
हमने शिक्षा पाई है।
गलत राह पर भटके जब हम,
तो गुरुवर ने राह दिखाई है,
गुरु की महिमा न्यारी है।

माता-पिता ने जन्म दिया पर,
गुरु ने जीने की कला सिखाई है।
ज्ञान चरित्र और संसार की,
हमने शिक्षा पाई है,
गुरु की महिमा न्यारी है।

जब भी करते गलत कार्य हम,
तब पिटाई भी लगाई है,
सदमार्ग पर चलें सभी हम,
बात सदा दोहराई है,
गुरु की महिमा न्यारी है।

शेख्वा एम. पटेल (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा

गुरू बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना जीवन नहीं,
गुरु ही हैं जीवन के आधार, गुरु बिना जीवन निराधार।

गुरु ही देते हमको आकार, गुरु ही करते स्वप्न साकार,
धन्य है वो बालक, गुरु बन जाएँ जिसके पालक।

गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना जीवन नहीं,
सद्‌गुरु मिलते भाग्य से, जीवन धन्य होता आराध्य से।

है वो क्षमता उनमें, कर दे दूर निरक्षरता पल में,
गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना जीवन नहीं।

राज-काज भी पलट दिया, निरंकुश का संहार किया,
गुरु ही वो व्यक्ति है, जिसमें प्रकाश देने की शक्ति है।

हो नहीं सकता कोई, उऋण गुरु के ऋण से,
गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना जीवन नहीं।

गुरु ने ही जग को सवाँरा, गुरु ने ही भव सागर से पार उतारा,
गुरु की टंकार को सबने जाना, गुरु की झंकार को सबने माना।

गुरु को करते हैं हम शत्-शत् नमन, गुरु करते हैं बुराइयों का दमन।

दीपक पाठक (9)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

गुरु की महिमा

गुरु वो बाँसुरी है, जिसके बजते ही,
अंग-अंग थिरकने लगता है।

गुरु वो अमृत है, जिसे पीके,
कभी कोई प्यासा नहीं रहता।

अपने गुरु में पूर्ण रूप से,
विश्वास करें यही साधना है।

गुरु वो कृपा ही है जो सिर्फ कुछ
सद् शिष्यों को विशेष रूप में मिलती है,
और कुछ पाकर भी समझ नहीं पाते।

गुरु वो मृदंग है जिसके बजते ही,
सोहम नाद की झलक मिलती है।

गुरु वो खजाना है जो अनमोल है,
गुरु वो समाधि है जो चिरकाल तक रहती है।

गुरु वो प्रसाद है जिसके भाग्य में हो,
उसे कभी कुछ माँगने की जरूरत नहीं

मैं आपको शत-शत प्रणाम करती हूँ,
मेरी माँ ने तो मुझे जन्म दिया।

आपने तो मुझे ज्ञान दिया,
और जीवन सफल बना दिया।

रेनू यादव (10)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

गुरु की महिमा एवं महानता

गुरू है एक ऐसा नाम,
जिनके बिना ना होता काम,
देते हैं आशीर्वाद हमें सदा,
करना मत तिरस्कार कदा।

मदद करते हैं हमारी हमेशा,
सदा बनी रहेगी यह आशा,
करो हमेशा इनका आदर,
प्रणाम हैं इनको मेरा सादर।

इनके जैसा कोई न दूजा,
हमेशा करो इनकी पूजा,
करना ना कभी इनकी हँसी,
नहीं तो तुम्हारी नईया फँसी।

दिखाते हैं हमको सही रास्ता,
इनमें रखो सभी आस्था,
मानो इनकी हर बात,
जीवन में ना खाओगे मात।

गुरु हैं ज्ञान के भंडार,
इनमें समाया जीवन का सार,
किया इन्होंने हमारा उद्धार,
यही है जीवन के आधार।

चमकाएँ हमें मोती जैसे,
कोई न दूजा ऐसे,
यही हैं हमारे सच्चे हितकारी,
हम बनें इनके पुजारी।

दुनिया के ये सच्चे जानकार,
बनाएं हर बालक को कलाकार,
डाँटते हैं हमें जरूर,
कहते हैं न करो ग़ुरुर।

हम हैं इनके लिए अधूरी मूर्ति,
देकर आकार करते हैं इसकी पूर्ति,
जिनके द्वारा द्वार खुलना,
कभी न करना इनकी तुलना।

इनकी महिमा है अपरंपार,
लगाएं भविष्य की नईया पार,
नाराज़ न होते कभी,
प्रिय हैं इनके सभी।

करते हैं हर गलती माफ,
बनाएं हमको दूध-सा साफ,
बुराई अनदेखा कर सँवारे अच्छाई,
न छानें दे अंधकार की परछाई।

नि:स्वार्थ हैं ये बात गिरह बाँधना,
करो हमेशा इनकी साधना,
इनकी साधना में जीवन जिसका,
उसको है डर किसका ?

उदिता सिंह (10-अ)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

गुरु की महिमा एवं महानता

गुरु महान है,
सर्व शक्तिमान है,
भारत का स्वाभिमान है,
जीवन का ज्ञान है।
भगवान का वरदान है,
स्वयं भगवान समान है,
गुरु के चरणों में विद्या का भंडार है।
गुरु महान है ...

गुरु सहनता और शीतलता की मूर्ति है,
गुरु माँ का रूप है।
जो बदलता अपना स्वरूप है,
गुरु छात्र का विधाता है।
गुरु एक सच्चा जौहरी है,
जो छात्रों को पहचानता है।
गुरु महान है ...

गुरु के बिना इस जीवन में,
सफलता पाना नामुमकिन है।
हर छात्र के जीवन में,
एक गुरु का साया होता है।
कहते हैं यह वेद और पुरानों में,
जो करते हैं गुरु की सेवा,
उन्हे प्राप्त होता है वैकुंठ।
गुरु की महिमा अपरंपार है।
गुरु महान है ...

जशवंत एस. नायक (10-ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

मधुबन की घटाओं , में गुरु देव तुम्हें देखूँ ,
इन काली घटाओं में गुरु देव तुम्हें देखूँ ,
जिस गुरु ने माता पिता का कार्य निभाया,
उसे देख आदर से आज सिर झुकाया।

गुरु का महत्व कभी न होगा कम,
भले कर ले कितनी भी उन्नति हम,
वैसे तो है इंटरनेट पर हर प्रकार का ज्ञान,
पर अच्छे बुरे की नहीं है उसे पहचान।

नहीं है शब्द कैसे करें, धन्यवाद,
बस चाहिए हरपल आप सबका आशीर्वाद,
हूँ जहाँ आप में, उसमें है बड़ा योगदान,
आप सबका जिन्होंने दिया मुझे इतना ज्ञान।

आपने बनाया है मुझे इस योग्य,
की प्राप्त करू मैं अपने लक्ष्य,
दिया है हर समय आपने सहारा,
जब भी मुझे लगे कि मैं हारा।

पर मैं हूँ कितनी मतलबी,
याद किया न मैंने आपको कभी,
आज करती हूँ दिल से आप सब का सम्मान,
आप सब को हैं मेरा शत-शत प्रणाम।

चंदा भोया (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

माँ-बाप की मूरत है गुरु,
कलयुग में भगवान की सूरत है गुरु।

गुरु चरणों की महिमा है न्यारी,
गुरुवर के चरणों पर जाऊँ बलिहारी।

राम, कृष्ण अवतार है जितने,
राह दिखाई प्यार की गुरुने।

जब करते गलत कार्य तो पिटाई भी लगाई है,
सद्मार्ग पर चले हम तो बात सदा दोहराई है।

आरुणि की गुरुभक्ति से हमने शिक्षा पाई है,
ज्ञान, चरित्र और संस्कार की हमने शिक्षा दोहराई है।

हरि कृपा से सत्गुरु पाया,
सत्गुरु ने ये जीवन में हरि मेल कराया।

गुरु चरणों की सेवा में बल लगाऊँ,
हरी भरी भक्ति के मीठे फल पाऊँ।

बिना गुरु के कोई भी दूसरे किनारे तक नहीं जा सकता है,
गुरु ने ही सिखाया बीच मुश्किलों को भी पार कर सकता है।

कोई गुरु के तर्क को नहीं समझ सकता,
भले वह इंसान युगों तक तर्क करता रहता।

हरी भरी हो तेरी फुलवारी,
गुरु चरणों की महिमा है न्यारी।

सिद्धि पटेल (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

हर प्रकार से नादान थे तुम,
गीली मिट्टी के समान थे तुम।
आकार देकर तुम्हें घड़ा बना दिया,
अपने पैरों पर खड़ा कर दिया।

गुरु बिना ज्ञान कहाँ,
उसके ज्ञान का आदि न अंत यहाँ।
गुरु ने दी शिक्षा जहाँ,
उठी शिष्टाचार की मूरत वहाँ।

अपने संसार से तुम्हारा परिचय कराया,
उसने तुम्हें भले-बुरे का आभास कराया।
अथाह संसार में तुम्हें अस्तित्व दिलाया,
दोष निकालकर सुदृढ़ व्यक्तित्व बनाया।

अपनी शिक्षा के तेज से,
तुम्हे आभा मंडित कर दिया।
अपने ज्ञान के वेग से,
तुम्हारे उपवन को पुष्पित कर दिया।

जिसने बनाया तुम्हें ईश्वर,
गुरु का करो सदा आदर।
जिसमें स्वयं है परमेश्वर,
उस गुरु को मेरा प्रणाम सादर।

जेनिश पटेल (10-ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

महिमा अपरम्पार गुरु की,
जिसने हमें इतना पढ़ाया,
चाहे विज्ञान हो या हिन्दी,
और अच्छा विद्यार्थी बनाया।

कृपादृष्टि हो जाए जिस पर,
धन्य वही है कहलाता,
भक्ति भाव से अपने भीतर,
झलक गुरु की है पाता।

गोरे काले धर्मी पापी,
हर कोई भिन्न भिन्न लगता है,
अद्भुत लीला गुरु की देखो,
सबको सदगुण सिखाते हैं।

मन में निष्ठा जो हो सच्ची,
हरपल रक्षा हमारी ये करते,
दुख-सुख में यह साथ देते,
हर दुख में सच्ची राह दिखाते।

जिंदगी में हमेशा गुरु को,
हमें देना चाहिए सम्मान,
कहीं भी जाओ न मिलेंगे,
एसे गुरु जो है महान।

पटेल फेनी राकेशभाई (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

किसका नाम चमक रहा है देश की गलियों में ?
कौन है जिसने आजादी दिलाई और जीने की राह सिखलाई ?

कौन देश पर कुर्बान हुआ ?
किसके द्वारा इतना महान हुआ ?

किसने अंग्रेजो के खिलाफ़ सत्य बोली से लड़ना सिखलाया ?
कैसे बगैर एक थप्पड़ लड़ना सिखाया ?

कौन था जो सबको एकता का मंत्र दे गया ?
किसने हमे आजाद कराया 15 अगस्त दे गया ?

कौन था जो भटक रहे लोगों को बोलने की शक्ति दिलाई ?
किसने गुलामी झेल रहे भारतीयों को आज़ाद कराया ?

वो महात्मा गाँधी थे, जो सत्य की शक्ति के साथ अहिंसा के दम पर
वो चलती फिरती आँधी थे।

जब कभी जीवन में तुम हिम्मत हारने लगो,
तो सत्य की शक्ति परख के देखो।

तो लगो यह विचारने कि साधारण आदमी सत्य की शक्ति से पूरे
ब्रिटिश साम्राज्य को हिला सकता है।

तो हर आम इन्सान क्या कुछ नहीं कर सकता है ...
जीवन में ये याद रखना कि सत्यता की शक्ति को सदा साथ रखना।

सत्य तुम्हारे साथ है, हम मनुष्य के पास है।
सच्चाई जहाँ भी है, वहाँ जीत का वास है।

हमेशा हमको दिलाए पराजय से मुक्ति वो है सत्य की परम् शक्ति।

रोहितकुमार एच. पटेल (12-ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

हम कभी सत्य को बदल नहीं पाएँगे।
लेकिन सत्य से हम बदल जाएँगे ।।
यह है सत्य की शक्ति।
जो असत्य को नष्ट कर दिलाए मुक्ति।।

महात्मा गाँधी थे सत्य के सही उदाहरण।
और किया था देश में सत्य का जागरण।।
सत्यनिष्ठ बनकर किया था देश को स्वतंत्र।
यह है सत्य की शक्ति का मूलमंत्र।।

सत्य का राह न छोड़ो कभी।
क्योंकि सत्य के राह को मानते सभी।।
सत्य की हमेशा होती है जीत।
और सत्य से मिलती है असत्य पर जीत।।

सत्य की राह है परम शक्तिशाली।
जो असत्य को कर दे मन से खाली।।
सत्य का पालन करो हरदम।
इससे मिलेगा सबसे प्यार हरदम।।

सत्य का जो गाएँ गुणगान।
बनेगा वो सत्यनिष्ठ एवं महान।।
सत्य से बनता है हमारा अच्छा चरित्र।
सत्य से हो जाता है मन पवित्र।।

सत्य असत्य को मिटाएँ।
और सत्यनिष्ठा के भाव मन में उगाएँ।।
बोलते रहो हमेशा सत्य।
जिससे नष्ट हो जाए असत्य।।

लाए तेज मुख पर।
ये है सत्य की शक्ति।।
दिलाए मन को भय से मुक्ति।
ये है सत्य की शक्ति।।

अटल रहे अपने पथ पर।
ये है सत्य की शक्ति।।
दिलायी हमें आज़ादी।
ये है सत्य की शक्ति।।

नहीं झुकाए सर अपना कभी।
ये है सत्य की शक्ति।।
रखें आपके मन में विश्वास अटल।
ये है सत्य की शक्ति।।

दिलाएँ आपको मान सम्मान।
ये है सत्य की शक्ति।।

श्यामकुमार शान्तुभाई पटेल (12-ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

सत्य है जीवन है,
सत्य हमारा ध्येय है,
सत्य है मार्ग ध्यान का,
सत्य है मार्ग ज्ञान का,
सत्य है सुख और शान्ति,
सत्य है जीवन है,
हम विद्यार्थी है।

सत्य पर चलने वाले,
सत्य है मार्ग भक्ति का,
सत्य है मार्ग शक्ति का,
सबका सत्य है साथी,
सत्य ही जीवन है।

सत्य पर चलना है,
सबसे यही कहना है,
मुक्ति मिले सत्य से,
सदा अमर हो सत्य से,
फातिमा का है ये संदेश,
सत्य ही जीवन है।

प्रसाद पटेल (12-ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

सत्य तुम रुकना नहीं,
सत्य तुम झुकना नहीं,
हो भले असत्य की,
काली घटाएँ सामने,
बनके सूरज तुम चमकना,
पर कभी छिपना नहीं,
सत्य तुम रूकना नहीं ...

सत्य कहता है, खुद को,
स्वयं उद्घाटित नहीं करता।
सत्य हमेशा,
चुनौती पेश करता है।
अपने को खोज कर पा लेने की,
और हमारी जिज्ञासा को अतृप्त से भर देता हैं,
सत्य तुम रुकना नहीं ...

है अंधेरो से भरे,
दूर तक ये रास्ते,
बाँट जोते है तुम्हारी
रोशनी के वास्ते
इन अंधेरो से कभी
सत्य तुम डरना नहीं ...
सत्य तुम रुकना नहीं ...

दर असल
सत्य कभी एक साथ पूरा नहीं खुलता
वह खुलता है परत दर परत
और एक यात्रा चल निकलती है।
अनंत सी अनवरत

बढ़ रहा है असत्य का
सामाज्य चहुँ ओर ही
अन्याय और अनीति की
फैली हवा सब ओर ही
बन के खुशबू तुम महकना
पर कभी खोना नहीं,
सत्य तुम रुकना नहीं ...

यह अलग बात है कि
हममें से अधिकतर पर
गुजरता है यह दुरुह और दुष्कर
उसे ही सत्य मान लेते हैं
जो मिल जाता है इधर-उधर।

ध्वनी पी. देसाई (11-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

सत्य का मूल है सबसे निराला,
पढ़ों और पढ़ाओं यही है नारा।

अज्ञानता मे ज्ञान ही, करता है उजाला,
सभी गुणों का है यह रखवाला।

जन–जन में दोषों को मारनेवाला,
सत्य का मूल है सबसे निराला।

गाँधी, सुभाष, भगतसिंह, सरदार ने भी,
सत्य से बनाई, पहचान अपनी।

सत्य की नींव में पलते हैं जो,
सद्‌गुणों के पट में आते हैं वो।

दुष्ट, दुर्गुण, पापीओं का किया संहार,
सज्जनता, सुनीतिओं से सत्य की है, अलग पहचान।

ईशु, बुद्ध, महावीर नें भी लिया सहारा सत्य का,
इसलिए तो सत्य का मूल है सबसे निराला।

देखा है, मैंने सत्य की इन लहरों को,
सृष्टि के क्षण–क्षण में।

सत्य का मूल है, सबसे निराला,
पढ़ो और पढ़ाओं यही है नारा।

जैन विनय कुमार
श्री शांताराम भट्ट इंग्लिश मीडिएम – मोता

सत्य की शक्ति

कर लो गर्म पानी जितना, पर बुझ जाएगी आग,
न सीमा है कोई सत्य की, बस उसके पीछे भाग,
यह कलयुग के जीवन में असत्यता सी ही है रीत,
पर इस महायुद्ध में होगी सत्य की ही जीत।

जो ना बदला था, ना बदला है, बदल देगा सभी,
सच है जो सच था, ना कोई बदल सकेगा कभी।

है सत्य मुख का आभूषण लाए लबों पे जोश,
बिना इसके, इशारे है चुप और जुबान भी खामोश,
सत्य जोड़े देश को पर असत्यता से एकता है बिखरी,
अब इन अंधी आँखों में जलती असत्यता है आखरी।

जो ना बदला था, ना बदला है, बदल देगा सभी,
सच है जो सच था, ना कोई बदल सकेगा कभी।

ढ़लेगा सूरज मिटेगी आशा, जब छायेगी असत्यता,
बरसेगा वह बनकर काँटा, घटेगी सत्य की सत्यता,
पर असत्य से लौटकर पीछे हम ना सर घुमाएंगे,
मिलजुल कर सच का सागर हम बरसाएंगे।

जो ना बदला था, ना बदला है, बदल देगा सभी,
सच है जो सच था, ना कोई बदल सकेगा कभी।

मिट जाते हैं दवाईयों से, जो बने हथियार से घाँव,
असत्य की बाढ़ से बचा सकती है सिर्फ सच की नाव,
कड़वा है पुदीना पर सुधारे पूरे 'शरीर का हाल,
सत्य भी है कुछ ऐसे, सुलझाएँ जीवन के सवाल।

जो ना बदला था, ना बदला है, बदल देगा सभी,
सच है जो सच था, ना कोई बदल सकेगा कभी।

पार्थ वसंतभाई प्रजापति (11-ब) (प्रथम श्रेणी - उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सेवा एवं परिश्रम के अवतार ‘‘किसान’’

चाहे सूरज खूब तपाये,
बादल पानी भी बरसाये,
किसान अपना हल चलाये,
और हरदम पसीना बहाये।

गर्मी में तरबतर तन,
सर्दी में कुहरा गहन,
किसान अपने कार्य में मगन
बिना काम नहीं लगता मन ।

खेतो में हरियाली
लगती है, प्यारी-प्यारी,
भूख से पेट खाली,
जिसने की हम पर महेरबानी।

ना रहने को घर,
ना लगता उनको डर,
ना पैरों में जूते,
नुकीले काँटे हैं चुभते।

चाहे रात हो या दिन
सुख-चैन जाते हैं छिन,
किसान अपने कार्य मे लीन,
उगाते हैं फसल भिन्न-भिन्न।

ये वो लोग है जो रखते आस,
टूट जाने पर भी नहीं होते उदास,
इसमे नहीं इनका कसूर,
कभी भारी बारिश को तो कभी अकाल असुर।

नेता जी, सिर्फ बातें करते,
चुनाव के वक्त हामी भरते,
कौन है सच्चा, कहना है आसान,
ढूँढ़ लाओ माने भगवान।

भगवान के होते अवतार
अन्न का देते भंडार,
अपने कर्मठ हाथों से,
करते हैं निरंतर चमत्कार।

यह कैसी नादानी है,
जो विश्व का अन्नदानी है,
ना उसको खाने को रोटी,
ना फसल के लिए पानी है।

भर पेट खाना खिलाकर,
जो देता है खुशी,
क्यों उसके ही नसीब में
लिखी है खुदकुशी।

`` जय जवान, जय किसान ''

हर्ष पटेल (८-ब) (प्रथम श्रेणी-पूर्व माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

कविता - किसान के उपकार

जानते हैं हम किसान को सदियों से,
जो दूसरे के लिए जीता है, शताब्दियों से।

कहते हैं किसान धरती माँ का बेटा,
करता है मेहनत बेचारा दिन-रात अकेला।

रखता खेत का ध्यान दिन-रात जगकर,
सोता तीन घंटे अपने सारे दुख सहकर।

खाता है थोड़ा खाना, मुश्किल से मिलता उसको पानी पीना,
हमारा पेट भरने के लिए उसको पड़ेगा जीना।

किसान मजबूर है क्योंकि उसको संभालना होता है,
घर और खेत का काम,

मेहनत करता है इसीलिए है ऊँचा उसका नाम।
कदर नहीं जिसकों भी इसकी,
वो पछताए जीवन भर।

समझते हैं हम किसान को जीवन का आधार,
क्योंकि वही तो है हमारा पालनहार।

किसान झेलता है देश के नुकसान,
पर रखता है वह हमारे खान-पान का ध्यान।

किसान को क्या कहे ईश्वर या चमत्कार,
उसी से होता है हमारे जीवन का सत्कार।

किसान रखता है पूरे देश का ध्यान,
इसीलिए किसान को हमारा सलाम।

हेत्वी पटेल (8-अ) (द्वितीय श्रेणी-पूर्व माध्यमिक)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

मेहनत व परिश्रम के अवतार किसान

परिश्रम व मेहनती इंसान,
होते हर बस्ती में किसान।

किसान है परिश्रम का अवतार,
इसके बिना अधूरा संसार।

इसकी मेहनत अपरंपार,
इसने हम पर किए उपकार।

इसकी हम सब पर है कृपा,
इसमें हर गुण मेहनत का छुपा।

लगातार करता है ये परिश्रम,
इसका ताप कभी न होता कम।

इसकी मेहनत चल रही सदियों से,
इसके खेत जुड़े हैं नदियों से।

अगर मेहनत है समुद्र,
तो किसान है उसका सुपुत्र।

इन्होंने गाएँ जीवन के ताल,
करके परिश्रम लगातार, पूरे साल।

ये हैं सम्राट अनाज के,
इनका दिन नहीं बिना कोई काम के

यह झेलता देश का नुकसान,
और सही रखता हमारा खान-पान।

मेहनत है किसानों की क्रिया,
इन्होंने हर काम परिश्रम से किया।

वह जीवित रहता इस धरती पर निर्भर,
और मेहनत करता रहता यह खेतिहर।

परिश्रम करने से कभी न चूके,
भले आए बाढ़ या धरा सूखे।

मंद हवा चले या छा जाए घन,
मेहनत इसके लिए हर मौसम।

धूप कड़ी हो या छा जाए घने-घने,
चबाता यह लोहे के चने।

इसके लिए अपना हाथ जगन्नाथ,
यह हर देश के हैं दाएँ हाथ।

धान उगाता रहता व्यस्त,
रखता खिला-पिला कर हमको स्वस्थ।

बहुत मेहनती होते हैं किसान,
ये होते हैं परिश्रमी इन्सान।

वसुधा सिंह (8)
(तृतीय श्रेणी-पूर्व माध्यमिक)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

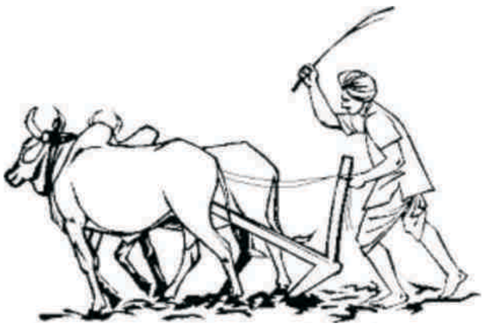

देश के विकास में मजदूर का योगदान

विकास की इमारत में,
किसी मजदूर का खून,
पसीना बनकर बह रहा है,
वह फिर भी गरीब है,
उसको है हर वस्तु का अभाव।
पुराने 'शोषण की पुरानी कहानी कह रहा है।

दौलतमंदों की तिजोरी में
जैसे-जैसे रकम बढ़ती जाएगी,
कागजों पर गरीबी रेखा,
उससे ज्यादा चढ़ती नज़र आएगी।

यकीनन विकास बहुत हुआ है,
पर हम वहीं खड़े हैं,
सभी कह रहे हैं,
देश विकास की राहों पर,
दौड़ता जा रहा हैं,
हम यकीन कर लेते हैं,
देश बड़ा है,

हम थोड़े ही बड़े हैं,
विकास में अमीर
जमीन से आकाश पर चढ़ते हैं
मगर गरीब हमेशा
अपनी पुरानी रोटी की
लड़ाई पुराने ढंग से ही लड़ते हैं।

समझते हैं हम किसान को जीवन का आधार
क्योंकि वही तो है हमारा पालनहार
किसान झेलता है देश के नुकसान,
पर रखता है हमारा देश महान।

जिया पटेल (6) (प्रोत्साहन-पूर्व माध्यमिक)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

(गुरु की महिमा)

ज्ञानी-विज्ञानी मानवता का प्रेमी था वो,
संकीर्ण तुच्छ लक्ष्य की लालसा जिसे पाप समझता था वो,
देश का सच्चा सपूत था वो,
जात पात से परे नेक बन्दा था वो,

सपनों को सच करता मेहनत से न कभी डरता,
मेरा देश महान, गुणवान, धनवान हो यही प्रेरणा करता,
मन में भाव सदा वो रखता,
भारत देश मेरा महान हो,

जब तक रहा पावन धरा पर वो,
ज्ञान विज्ञान का दीप सदा जलाए रखा,
युवाओं का सच्चा साथी वो,
फकीराना जिंदगी जीकर जिसने,

देश को ताकतवर बनाया,
सबसे चहेता राष्ट्रपति कहलाकर,
लाखों दिलो में अपनी जगह बनाया
अब यादों में बस गया वो,

नम आँखों को छोड़ कर वो,
अनगिनत यादों में बस गया,
मिसाईल मैन कहलाने वाला,
अलविदा दोस्तों से कह गया,

सच्चा गुरु था वो।

सुमित जोशी (10)
(प्रथम श्रेणी-माध्यमिक)
श्री राजश्री विद्या मंदिर - भरूच

कविता (गुरु-महान)

अंतिम सत्य मुक्ति जीवन की,
धर्म और आध्यात्म पढ़ाया, तुमने,
तुम्हें प्रणाम गुरु जी। हर किसी का जो व्यक्तित्व निर्माण है।
माँ पिता के साथ गुरु का भी स्थान है।
गुरु अथवा शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
वह ही राष्ट्र की संस्कृति का निर्माता है।
गुरु शिष्य रिश्ते में गुरु का दायित्व प्रधान है।
तो उसका अधिकार शिष्य से पाना सम्मान है।
किन्तु रिश्ते तो आज भी वही मौजूद है।

पर दायित्व भी शिथिल हैं नहीं सम्मान का वजूद है।
शिक्षक दिवस पर हम शिक्षक का सम्मान भले न कर पायें।
लेकिन पोलियो दिवस पर उसे घर-घर घुमाएँ।
मतदाता सूचियों के लिए भी शिक्षक काम आता है।
लोकसभा से लेकर पंचायत तक के चुनाव भी कराता है।
शिक्षा देने के सिवाय दूसरे बहुत काम हैं।
विडंबना कि फिर भी शिक्षक का नाम है।

देश की हवा में फैले भ्रष्टाचार से वह भी नहीं बच पाया है।
धन की चमक में वह भी इतना भरमाया है।
कि भविष्य निर्माण के दायित्व से मुँह मोड़ रहा है।
द्रोणाचार्य सी गुरु गरिमा को खुद ही तोड़ रहा है।
फिर एकलव्य से शिष्य कहाँ से पाओगे ?
सम्मान तो दुर्लभ होगा ही पर शिक्षक फिर भी कहलाओगे।

कुश पी. पटेल (9-ब) (द्वितीय श्रेणी-माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

गुरु चरणों की महिमा है न्यारी,
वचन गुरु के है हितकारी,
गुरु की दी गई शिक्षा है उपकारी,
गुरु चरणों की महिमा है न्यारी।

गलत राह पर भटके जब हम,
तो गुरुवर ने राह दिखाई,
अज्ञानता को दूर करके,
ज्ञान की ज्योत जलाई।

माता-पिता ने जन्म दिया पर,
गुरु ने जीने की कला सिखाई,
ज्ञान चरित्र और संसार की,
हमने शिक्षा पाई।

सेवा की मैं बेल लगाऊँ ,
भक्ति के मीठे फल पाऊँ ,
सद्मार्ग पर चलें सभी हम,
बात ये सदा दोहराई है।

जब भी करते गलत कार्य हम,
तब पिटाई भी लगाई है,
कैसे करूँ आपका धन्यवाद,
चाहिए हरपल आपका आशीर्वाद।

गुरु का महत्व कभी होगा न कम,
भले करले कितनी भी उन्नति हम,
इंटरनेट पर है हर प्रकार का ज्ञान,
पर अच्छे की नहीं है, उसे पहचान।

जिंदगी में मेरा है बड़ा योगदान,
आपका जिन्होने दिया इतना ज्ञान,
सिखाया करना अच्छा काम,
कुर्बान है आपके लिए ये जान।

आपको मेरा शत-शत प्रणाम ...

श्रेया आर. जादव (10-अ) (तृतीय श्रेणी-माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा

वाणी तेरी चिड़ियाँ जैसी,
कुछ गीत खुश होकर गाते हैं।
जग में कितने वैज्ञानिक, कितने नीतिकार,
कितने पंडित, कितने ध्यानी, इतिहासकार,
पर सबसे सुंदर तेरा चमत्कार!
जय हो उसकी जिसने मुझको पढ़ना सिखाया,
अपनों से बढ़कर जिसने मुझको प्यार दिया,

जब छम-छम बूँदें गिरती है,
तब याद तुम्हारी चम-चम कर जाती है,
तब याद तुम्हारी आती है,
जब ठंडी-ठंडी हवा बहती है,
तब याद तुम्हारी आती है,
है गुरु! याद तुम्हारी आती है।

जब मैं पढ़ता नहीं,
तब गुस्से होकर डाँटते, कहते ``पढ़ बेटा! आ जा''
पर जब मैं न जाता हँसकर कहते ``मुन्ना राजा''
आ जा बेटा! तुम्हें मिठाई दूँगा,
नए खिलौने, माखन, दूध, मलाई, दूँगा,
पूरी दुनिया तुम्हारी राह पर चली,
क्योंकि तुम ही तो हो दुनिया के महाबली,

झरने जब झर-झर झरते हैं,
तब याद तुम्हारी आती है,
सागर में ज्वार उठत है,
तब याद तुम्हारी आती है,
जब चाँद शान से उगता है,
तब याद तुम्हारी आती है,
हे गुरु! याद तुम्हारी आती है।

यश पटेल (९ब)(प्रोत्साहन-माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गुरु की महिमा एवं महानता

जो हो भक्त सदगुरु का,
वो ना और किसी की आस करे,
गुरु के नाम पर ही जिए,
गुरु पर ही विश्वास करे।

गुरुभक्ति है जिसकी कमाई,
रखना नहीं वो आस पराई,
गुरु का ही वो बन के रहे,
और उसी पर विश्वास रखे।

सुख हो या दुःख हो,
गुरु का वो भक्त हो,
गुरु पर पूरा विश्वास हो,
उसी पर जीवन अर्पण हो।

गुरु बिना कुछ और ना सुहाएँ,
गुरु भक्ति ही भक्त को भाएँ,
\`\`जगत'' गुरु को अर्पण अपना हर एक श्वास करें,
गुरु पर ही विश्वास करें।

यही वो दास है,
जिसने उसका जीवन अर्पण किया है,
उस महान गुरु को,
जिसकी महिमा का शत-शत उपकार है।

पटेल विश्वा (10-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

श्वेत-शाश्वत अखंड अतुलनीय सत्य,
अद्वितीय, अपराजित, अविरत सत्य,
अपराजित है वो जिसके साथ है सत्य,
अनादि काल से अपराजेय सत्य,
बापू का ब्रह्मास्त्र सत्य,
राजा हरिश्चंद्र की पहचान सत्य,
श्वेत-शाश्वत अतुलनीय सत्य।

कलियुग में लाचार, अपंग सा लगता सत्य,
पग-पग परास्त होता लगता सत्य,
हर पल अपमानित, खंडित होता सत्य,
समय के चक्र में अखंड अपराजेय सत्य,
असत्य के सामने तुच्छ सा लगता सत्य,
परन्तु असत्य को परास्त करता सत्य,
श्वेत-शाश्वत अखंड अतुलनीय सत्य।

मत रुको जहाँ पर हो असत्य,
मत सोचो परास्त होगा सत्य,
साथ रहो उसके पास जहाँ हो सत्य,
वंदन करो उसका जिसकी वाणी में हो सत्य,
सहयोग दो उसका जिसका कर्म हो सत्य,
प्रेम करो उससे जिसका धर्म हो सत्य,
अखंडित अपराजेय रहे सर्वथा सत्य,
श्वेत-शाश्वत अखंड अतुलनीय सत्य।

पटेल अमी (11-अ) (द्वितीय श्रेणी-उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

सत्य तुम रुकना नहीं,
सत्य तुम झुकना नहीं,
हो भले असत्य की,
काली घटाएँ सामने,
बन के सूरज तुम चमकना,
पर कभी छिपना नहीं ...

है अंधेरों से भरा,
दूर तक ये रास्ते,
बाँट जाते हैं तुम्हारी,
रोशनी के वासते,
इन अंधेरों से कभी
सत्य तुम डरना नहीं ...

बढ़ रहा है असत्य का
साम्राज्य चारों ओर ही
अन्याय और अनीति की
फैली हवा सब ओर ही
बन के खुश्बू तुम महकना
पर कभी खोना नहीं ...

असत्य सबकी राहों में,
बन के काँटा आया है,
हवा बनकर इन काँटो को,
सत्य तुम बहा ले जाना,
पर कभी मरना नहीं,
सत्य तुम कभी रूकना नहीं,
सत्य तुम कभी झुकना नहीं।

जयकुमार पटेल (12-ब) (तृतीय श्रेणी-उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सत्य की शक्ति

पानी की काया को समझो तुम,
तभी सुनामी से बच पाओगे,
सत्य की शक्ति को समझो तुम,
वरना रावण की तरह पछताओगे।

जब – जब सत्य की जीत हुई है,
रंगो से दुनिया रंगीन हुई है,
एक था प्रह्लाद जिसने मानी न हार,
क्योंकि सच्ची थी उसकी भक्ति और प्यार।

सत्य इतना बड़ा है,
ये झूठ इतना छोटा है,
जो बोले वो खोटा है।

झूठ बोलना तो आसान होता है,
पर मन हमारा भयभीत होता है,
सत्य बोलना तो कठिन होता है,
लेकिन मन को सुकून होता है।

सत्य के मार्ग पर चलना हरदम,
नहीं तो झूठ तुम्हें भटका देगा,
सोच समझकर रखना हर कदम,
वरना सिर तलवार से कटवा देगा।

डेरिक पटेल (12–ब) (प्रोत्साहन–उच्चतर माध्यमिक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

किसान

धूप है छाँव है,
जलते तेरे पाँव है,
धारा के विपरीत,
बहती तुम्हारी नाव है।

जिसने भूख मिटाई,
उसको कहते भगवान है,
जिसने हमको अन्न दिया,
वो भारत का किसान है।

कभी बाढ़ ने
कभी सूखे ने सताया है,
खुद को भूखा रख कर,
तूने हमें खिलाया है।

हर पल तुम परिश्रम करते हो,
लाखों लोगो की भूख,
तुम अपने पसीने से हरते हो,
किसान फिर क्यों तुम,
भूखे मरते हो।

तुम्हारी मेहनत को चूहे और नेता खा जाते हैं,
भूखों को कुछ मिलता नहीं,
अनाज खुले में सड़ जाता है,
और मेरे देश के किसान,
भूखे ही मर जाते हैं।

पटेल खुशी टी (8-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मैं मजदूर हूँ

मै मजदूर हूँ, मजदूर हूँ,
भगवान का रुप हूँ।

दिखने में हूँ शायद काला,
देता हूँ गौमाता को चारा।

काम करता हूँ धोती पहनकर,
पैसा कमाता हूँ मेहनत करकर।

मेरा सपना है बच्चों को पढ़ाना,
भविष्य में उनको मजदूरी नहीं है करवाना।

नहीं खिलापाना परिवार को,
शांति से नहीं सुन पाना गुनगान को।

मजदूरी के दिन है बहुत कठिन,
नहीं भूल पाता वह दिन।

कोई तूफान आ जाय तो चलेगा,
पर रूक गया तो मर जाऊँगा।

काम होता है दिन और रात,
लोगों के लिए यह अजीब बात।

गिर जाता हूँ काम करते-करते,
मेहनत नहीं छोड़ना मरते-मरते।

चलना है मुझे मेहनत में,
यही अच्छा है मुझे करने में।

मेरा सपना है कुछ बनना,
इसके लिए मुझे है चलना।

मेरा मन मजदूरी,
नहीं करता हूँ मैं मनमानी।

कभी–कभी कंटक चुभ जाएँ,
पर कोई न मुझे रोक पाएँ।

दुखता है पैर,
पर जिगर नहीं जाता।

बच्चों को पढ़ना पड़ता है अंधेरे में,
उनको रोशनी प्रदान करना मेरा सपना है।

मंजूर नहीं कर सकता दुख को,
उनको रोशनी प्रदान करना मेरा सपना है।

जो दूसरों के बारे में सोचे,
धूप मे काम करता हूँ।

आराम का पैसा नहीं लेता हूँ,
दिल में शायद खोट हो।

हाथ में सौ का नोट हो,
मैं मजदूर हूँ, मैं मजदूर हूँ।
भगवान का रूप हूँ।

शरण शेट्टी (7–ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान

वह है किसान, वह है किसान,
प्रात: उठें बैलों को जोड़े,
धरती जोतें, ठेले कोड़े,
घास-पात पत्थर ना छोड़े,
कर दें मिट्टी एक समान।

प्यारा उसको है वह बादल
प्यारा उसको नहरों का जल
करता कभी नहीं वह छल-बल
पशु-धन ही है उसके प्राण!
वह है किसान, वह है किसान।

चिलचिलाती धूप को,
जो चाँदनी बना देते।
काम पड़ने पर करे,
जो शेर का भी सामना।
वह है किसान, वह है किसान।

कभी बाढ़ और कभी,
अकाल आते हैं उसे सताने,
पर किस्मत का मारा वह,
बस मेहनत करना जाने,
वह है किसान, वह है किसान।

जो कि हँस-हँस के
चबा लेते है लोहे का चना।
``है कठिन कुछ भी नहीं ''
जिनके है जी में यह ठना,
वह है किसान, वह है किसान।

आयुषी पटेल (8-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान

किसान का दिन है,
जीवन का ये चिन्ह है।

मेहनत करना मेरा काम,
फल देना भगवान का काम।

पैसे का बोझ है,
मुझे आराम का खोज़ है।

दिन जाने में वक्त है,
किसान तो भगवान का भक्त है।

दुनिया मुझे जो माने,
मैं हूँ इस दुनिया में काम करने।

फसल मेरी लक्ष्मी है,
लेकिन तुम्हारे लिए खाना है।

फसल मेरे बच्चों का भविष्य है,
बढ़ते दुनिया का लक्ष्य है।

खोज ले तू आदमी को,
खोज लू मैं फसल को।

मगन मैं रहूँ गाने में,
खुश हूँ ढ़ोल बजाने में।

दिन मेरा बीत जाएँ,
मेरे बच्चे गीत गाएँ।

किसानी का दिन है,
जीवन का ये चिन्ह है।

मोक्ष पटेल (7–ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान

रात के पिछले पहरे में,
हाथ में ले मूँठ हल की,
खेत की पगडंडियों पर,
पदचिन्ह रखता जा रहा है।

धूल में भी, धूप में भी,
शीत में, बौछार में भी,
खेत में खलिहान में भी,
जो चला लिखने कहानी।

बैल जिसके मीत है,
खेत जिसके गीत है,
पेट की ज्वाला बुझाने,
जो चलाता हल धरा पर।

कर्ज में पैदा होता है,
और कर्ज में ही मर जाता है,
माँ धरती का सच्चा बेटा,
कितने दु:ख सह जाता है।

जानवी शाह (8-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान

मिट्टी से सोना उत्पन्न करते
कड़ी धूप में, पैरों में बिना जूते,
कड़ाके की ठंड में बिना स्वेटर,
और मूसलाधार बारिश में काम करते।

दिन-रात खेतों में काम करते,
देश-भर में खाना देते,
कठिन परिश्रम करना पड़ता,
पर उन्हें कोई नहीं देखता।

किसान की कृषि ही,
भक्ति और शक्ति है,
जिस से वह देशभर में,
अन्न, फल और सब्जी दे रहे हैं।

भारत का अवतार किसान है,
भारत की आत्मा किसान है,
सब यह मानते हैं,
क्योंकि किसान हमारे जीवन की माँग है।

अस्मिता एस. पटेल (८-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

किसान की बातें किसान ही जाने

उन्हें ताकत दे कि अपनी ताकत बने,
पर इतना कमजोर कर कि तुझसे डरे।

दे हिम्मत कि पलकों पर राज करें,
पर इतना भी बता कि पलकों के आँसू पी सकें।

कर इतना कि खूँ बन रगों में चले,
पर इतनी हिम्मत दे कि खूँ बहाने से बच सकें।

दिलों के आँसू बन दिलों की धड़कने बने,
पर हाँ किसी की दिली पीड़ा पर मरहम लगा सकें।

किसी की आत्मा में कही चिन्गारी बन जलें,
पर हाँ किसी का घर न जला सकें।

कभी कभी भविष्य की कामना बनें,
कभी सुरीले कंठ पर राज करें।

पर कभी वेदना को भी स्वर दिला सकें,
नहीं चाहते कि मुर्दे को जिंदा करें।

पर हाँ जीवित शव को जला सके,
कभी साँसों की माला में भले न फिरे,
पर घुटती साँसों को आजादी दिला सके।

भले न बन सके महान,
पर भगवान शक्ति दे कि एक अच्छा इंसान बने।

भाग्य को वही कोसता है, जो कर्महीन है।

टीपू सुल्तान (7)
उर्मि विद्यालय - वड़ोदरा

सेवा एवं परिश्रम के अवतार 'किसान'

`` मेहनती – कास्तकार ''

जो करे हमारा काम आसान,
वो है हमारे प्यारे किसान।

चावल, दाल, खेत में उगाएँ,
जो हमारी भूख प्यास मिटाएँ।

खेत में करें दिन रात मेहनत,
जो मिले, उससे रहे सहमत।

जो करे प्रेम भाव से सबका मान,
वो है हमारे आदरणीय किसान।

किसी को कुछ ना बोले कभी,
इसलिए उसें प्रेम करते हैं सभी।

आदर व्यक्ति का स्वरूप है वों,
प्रेम भाव की भावना सिखाएँ जो।

जो करें अपना काम लगा के जाना,
वो है हमारे मेहनती किसान।

मेहनत करके कमाएँ पैसा,
कभी ना बोले ऐसा वैसा।

हरदम करें सबकी सेवा,
कभी न पाया सुख का मेवा।

`` जय जवान, जय किसान ''

सुजल डेडकिया (८-ब)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सेवा एवं परिश्रम के अवतार 'किसान'

हेमंत में बहुदा घनों से पूर्ण रहता व्योम है,
पावस निशाओं में तथा हँसता शरद का सोम है,
हो जाये अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ,
खाते, खताई, बीज, ऋण से रंगे रखे जहाँ,
आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत,
अधपेट खाकर फिर उन्हें है कांपना हेमंत में।

बरसा रहा है रवि, अनल, भूतल तावा सा जल रहा,
है चल रहा सन सन पवन, तन से पसीना बह रहा,
देखो कृषक शोषिक, सुखाकर हल तथापि चला रहे,
किस लोभ से इस आँच में, वे निज शरीर जला रहे।

घनधोर वर्षा हो रही, है गगन गर्जन कर रहा है,
घर से निकलने को गरज कर, वज्र गर्जन कर रहा,
तो भी कृषक मैदान में करते निरंतर काम है,
किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम है।

बाहर निकलना मौत है, आँधी अंधेरी रात है,
है शीत कैसा पड़ रहा, थरथराता गात है,
तो भी कृषक ईंधन जलाकर, खेत पर हैं जागते,
यह लाभ कैसा है, न जिसका मोह अब भी त्यागता।

फेनी मोतावाला (८-अ)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सेवा एवं परिश्रम के अवतार है मजदूर

आज सुबह देखा एक बालक को,
चाय की रेड़ी पर,
चौक पड़ी जब मैंने देखा मजदूरी करते उसे,
मैले-कुचैले फटे कपड़ों में झाँकता तन,
उत्साह से आया चाय देने,
तब उत्सुकता से पूछा उससे प्रश्न मैंने
तुम कौन हो मेरे बच्चे,
और यहाँ क्या करते हो,
अपने बचपन को नीलाम।
वो कहने लगा, साहब,
कौन सा बचपन पूछते हो,
मैं तो हूँ किस्मत का,
और हालातों का मारा,
मैं तो हूँ एक मजदूर बेचारा,
चाहता हूँ बहुत मैं बचपन जीना,
साथ ही पढ़ना और खेलना,
परन्तु सुनो बाबू क्या मैं आपको दिखता हूँ बालक,
आपका यह बालक सच में परिवार का पालक,
शराब का आदि बाप, चिन्तित माँ का चेहरा,
भूख से लड़ता भाई-बेचारा,
इसलिए अपनी ओर अपने परिवार की भूख मिटाने,
आया हूँ अपने बचपन को नीलाम करने।
अब मैं चुपचाप था तब से,
देखता हूँ कई बाल मजदूर उस जैसे।
पूछ नहीं पाता परिस्थिति उनकी,
क्योंकि कहानियाँ अलग-अलग थी उन बाल मजदूरों की,
क्योंकि सेवा और परिश्रम का अवतार है यह बाल मजदूर।

नुपुर अमर देसाई (7-अ)
डिवाईन पब्लिक स्कूल - दांतेज (नवसारी)

एक किसान

जो अपने हाथों से, बंजर जमीं को,
अपनी इच्छाओं को ऐसी, हरी भरी फसल अपनी जमीं पर उगाता है।

जो सूखी रेत पर अपने, सपने सँजोता है,
सभी की सभी जरूरतों को पूरी करता है।

जो हर बीज से, अन्न उगाता है,
और सभी को खिलाता है, और जो उगाता अनाज सभी के लिए।
वो है एक किसान, वो है एक किसान ...

जिन्दगी से परे है, वो अपने आप में एक राजा कहलाता है।

जो उगाता है अन्न सभी के लिए,
जिसके जेहन में है न हिन्दू और न मुसलमान।
जो उगाता है अन्न सभी जाति के लिए,
वो है एक किसान, वो है एक किसान ...

जो मिटाता है भूख सैकड़ों की,
जो पालता है सैकड़ों को।
जो सिखाता है दुनिया को,
मेहनत का जज्बा।
वो है एक किसान, वो है एक किसान ...

राजा भले जमीं, और समंदर पर राज करता हो,
भगवान भले ही, बादशाह की तरह जीता हो।

सैनिक भले गर्व, और साहस की सवारी करता हो,
नाविक भले ही विशाल, समंदर का सफर करता हो।
लेकिन वो और एक वही है,
जो इन सबको पालता है।
वो है एक किसान, वो है एक किसान।

किसान का पैसा मूल्यवान है,
किसान सूर्य और धरा विहरता है,
किसान धूप और बारिश में विहरता है।

इन्सान कभी नुकसान पाता है,
या तो कभी मुनाफा पाता है।
इन्सान कभी चढ़ता है,
या तो कभी गिरता है।
पर वो और एक,
वही है जो इन सबको पालता है।
वो है एक किसान, वो है एक किसान,

भगवान का आशीर्वाद इस,
मेहनती और परिश्रमी पर हमेशा रहे।
और वो हमें पालता रहे,
और हमारी भूख मिटाता रहे।
वो है एक किसान, वो है एक किसान ...।

नायक ध्वनि पी. (८-अ)
डिवाईन पब्लिक स्कूल - दांतेज (नवसारी)

सेवा और परिश्रम के अवतार किसान और मजदूर

सेवा और परिश्रम के अवतार है किसान,
जो है हमारे भारत देश की शान,
और हमारे देश के मजदूर,
जो रहते हैं हर सुख-सुविधा से दूर।

किसान की मेहनत से मिलता है हमें अनाज,
मजदूर जो करते हैं हमारा हर काज,
ये ही सेवा और परिश्रम के अवतार,
जो देते हैं हर मुश्किलों को मात।

ये करते हैं मेहनत,
जिनके हर काम से रहते हैं,
हम सहमत,
ये ही है, जो कभी भी ना माने हार,
ये ही हैं, जिन्हें सूखी रोटी भी है स्वीकार।

जो उगाते हैं अनाज,
जो करते हैं हमारा हर काज,
क्यों न हमें भी करना चाहिए इनका सम्मान,
क्यों न हमें भी बनना चाहिए एक जिम्मेदार नागरिक।

यह तो सुना था की भगवान ही हैं,
हमारे सब कुछ,
पर आज के इस वास्तविक जिज्ञासा भरे
जीवन में हमारे देवता हैं किसान और मजदूर,
किसान हैं हमारे ग्राम देवता,
और मजदूर है हमारे देश की प्रगति।

तो मेरे सभी ग्राम देवता,
किसान एवं मजदूर को
मेरा शत-शत प्रणाम।

जय भारत, जय जवान, जय किसान,

रचना राय (7-अ)
श्री वल्लभ आश्रम डे बोर्डिंग स्कूल - वलसाड़

धरती का सच्चा बेटा - किसान

धरती माँ के प्यारे बच्चे,
दल और बैल के दोस्त है सच्चे,
खेत में बीज और पानी डाल के,
उगाते हैं हम दाने कच्चे।

बारिश धीरे-धीरे बहती,
किसानों की वो है प्यारी बहना,
दिलवाली है वो हमारी बहना,
दिल कहता है उसे कहे हम जननी।

मोती जैसे दानें पकते,
वो है हमारे दिल के गहने,
कभी-कभी हम खिलाते - खाते,
सब के प्यारे भाई हमारे।

जगत कहता है हमें उसके पिता,
देश के बने हम भाग्य विधाता,
धरती के हम रक्षक सच्चे,
जय जवान, जय किसान, नारे है सच्चे ।

मिट्टी से सोना उपजाता,
कहलाता जो अन्न का दाता,
धूप ठंड हो चाहे बारिश,
जिसको कोई रोक न पाता।

बादल जिसकी किस्मत लिखता,
आढ़तिया है जिसको ठगता,
फिर भी सबका पेट वो भरता,
कड़ी धूप नित मेहनत करता।

चाहे बरसात रवि अनल,
चाहे जलता हो भूतल,
टप - टप बहता रहे पसीना,
पर चलता वह अविरल।

चाहे अच्छी कभी हो फसल,
उसको कोई लाभ न मिलता,
पर ना जाने किस आशा में,
हर रोज धूप में जलता।

कभी बाढ़ और कभी अकाल,
आते हैं उसे सताने,
पर किस्मत का मारा वो,
बस मेहनत करना जाने।

कर्ज में पैदा होता है,
कर्ज में ही मर जाता है,
माँ धरती का सच्चा बेटा,
कितने दु:ख सह जाता है।

सब को अन्न देने वाले,
उसके घर में अन्न के लाले,
यह विडंबना कैसी है,
अब तू ही बता, ओ ऊपर वाले।

जोशी मेघा राजन (८-अ)
डीवाईन पब्लिक स्कूल - दांतेज (नवसारी)

सेवा एवं परिश्रम का अवतार किसान

किसान ... किसान ... किसान ...
परिश्रम का देवता होता है किसान
बारिश आऐ तो खुश,
ना आऐ तो खुश।

जीवन का आधार होता है किसान,
किसान अगर न होता इस जग में,
तो जीवन हमारा होता असंभव।
मानवता का आधार होता है किसान,
किसान अगर न बोता दाना, न हल चलाता,
तो हम सब क्या खाते ?
क्या जीवन जीते ?

सोचा कभी क्या इतनी मेहनत के बाद पाता है मान ?
उनकी ही मेहनत से हम खाते हैं,
नित नये-नये पकवान!

बेबसी का जीवन जीकर कब खुश है किसान,
न जाने इस देश में कितने दु:खी है किसान,
उनको अपनी मेहनत का ऋण नहीं मिलता,
कर्ज लेकर पल-पल जीकर मरते हैं किसान।

स्वयं उपजा कर अनाज, फिर भी दुगुनी कीमत खरीदता है किसान,
योजनाओं की आस में आज भी कर्ज में डूबा है किसान।

आओ मिलकर खाएँ कसम,
उनकी मेहनत का ऋण चुकाऐ।
ना झुकने दे, ना मुरझाने दे,
बस उन्हें सच्चा साथ, विश्वास और मदद दे सके...
तभी तो खुश रहेगा इस देश का हर किसान।
क्योंकि सेवा और परिश्रम का अवतार है यह किसान।

शाह जैनिका दीपकभाई (7)
डिवाईन पब्लिक स्कूल - दांतेज (नवसारी)

सेवा एवं परिश्रम के अवतार मजदूर

भरी दोपहर में,
मैले कपड़े पहने,
पसीने से नहाया,

ठेले पर केले बेचता वह आदमी,
आवाज देकर अपने ग्राहक की तलाश कर रहा है।

प्यास दबाने के लिए
पास रखी बोतल से गले में पानी भर रहा है।

कहे दीपक बापू सुनते हैं गरीबों के लिए,
बड़ी बड़ी बातें श्रीमानों के मुख से पढ़ते हैं बड़ी क्रांतियों की कथाएँ बड़े सुख से,

मज़दूर नहीं माँगते किसी से भीख,
मेहनत से जिंदा रहने की देते है जमाने को सीख,

हमने देखा हमेशा उनको अपनी बेचैनी के साथ,
पसीने के हथियार से जंग लड़ते हुए,

कभी नहीं दिखाई दिया कोई विशिष्ट पुरुष,
जो उनकी साँसो में ताजगी भर रहा है।

देव पारेख (6–अ)
डिवाईन पब्लिक स्कूल – दांतेज (नवसारी)

मजदूर

पत्थर तोड़ रहा मजदूर,
थक कर मेहनत से है चूर,
फिर भी करता जाता काम,
श्रम की महिमा है मशहूर।

मेहनत से न ये पीछे रहता,
कभी काम से न ये ड़रता,
पर्वत तोड़ बनाता राह,
नव निर्माण श्रमिक है करता।

नदियों पर ये बाँध बनाया,
रेल पटरियाँ यही बिछाता।
श्रम की शक्ति से मजदूर,
कल कारखाने भवन बनाता।

खेत में करता मेहनत पूरी,
पाता है किसान मजदूरी।
कतराता जो भी है श्रम से,
उसे घेरती है मजदूरी।

सहानी अनिता प्रहलादभाई (8-अ)
संदीप देसाई प्राथमिक विद्यालय - चोवीसी, नवसारी

आधुनिकता की होड़ में ...

आधुनिकता की होड़ में, हिंदी खड़ी है छोर में।
कहने को तो राष्ट्रभाषा है, किंतु शब्द कोई समझ न पाता है।
विदेश में बढ़ रहा है मान, किंतु भारत में ही नहीं मिल रहा उचित सम्मान।
हिंदी है वंदनीय, फिर भी उसकी हालत है निंदनीय।

आधुनिकता की होड़ में, हिंदी खड़ी है छोर में।
अंग्रेजी है हृदयहीन, फिर भी है प्रशंसनीय।
उठ जाग भारतीय इंसान, मत जाने दे हिंदी को श्मशान।
हिंदी से लोग करते हैं फाइट, अंग्रेजी गिटपिट एकदम राइट।
आधुनिकता की होड़ में, हिंदी खड़ी है छोर में।

कहने को हिंदी है अतुलनीय, किंतु अंग्रेजी है अनुकरणीय।
कागजों में तो राष्ट्रभाषा है शान, किंतु अंग्रेजी है मुख का मान।
घर में जिसका न होगा मान, क्या विदेशी करेंगे उसका सम्मान ?
आधुनिकता की होड़ में, हिंदी खड़ी है छोर में।

देख अपने ही देश में, हिंदी को अंतिम छोर में।
हृदय गाता करुणा गीत, हिंदी को बना लो अपना मीत।
हिंदुस्तान तभी विकसित बन पाएगा, जब वो हिंदी को अपनाएगा।
हिंदी को अपनाकर ही, उज्जवल भविष्य हिंदी का हो पाएगा
आधुनिकता की होड़ में, हिंदी खड़ी है छोर में।

अखिलेश कुमार तिवारी (हिन्दी शिक्षक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

जलो दीप जैसे

सुनो ध्यान से दुनिया वाले ऐसे,
टकटकी लगाये दुश्मन जैसे,
अगर जल सको तो जलो दीप जैसे,
गगन हो प्रकाशित धरा जगमगाए,
रात का अँधेरा कहाँ तक सहोगे ?
निराशा भँवर में कहाँ तक रहोगे ?
टटोलोगे कब तक भुलावे की राहें,
व्यथा की कथा आज किससे कहोगे ?
अगर चल सको तो चलो चाल ऐसे,
कि विध्वंस का भी हृदय काँप जाये।
अगर जल सको तो जलो दीप जैसे,
गगन हो प्रकाशित धरा जगमगाए,
विद्यार्थी जीवन को बनाओ ऐसे,
वाह मेरे दीपक जग में नाम कर जाओं।

योगेश ए. पटेल (हिन्दी शिक्षक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

अतुल्य भारत

उन्नत भाल हिमालय,
सुरसरि गंगा जिसकी आन।
उन्मुक्त तिरंगा शांति–दूत,
बना देता है संज्ञान।
चक्र सुदर्शन सा लहराए,
करता है गुणगान।
चहुँ दिशि पहुँचेगी, मेरे भारत की पहचान।।

महाभारत, रामायण, गीता,
जन–गण–मन सा गान।
ताजमहल भी बना,
मेरे भारत का अमिट निशान।
महिला शक्ति बन उभरी,
महामहिम भारत की शान।
अद्वितीय, अजेय, अनूठा ही है,
भारत मेरा महान।।

भाषा का सिरमौर,
सभ्यता, संस्कार सम्मान।
न्याय और आतिथ्य हैं,
मेरे भारत के परिधान।
विज्ञान, ज्ञान, संगीत मिला,
आध्यात्म गुरु का मान।
ऐसी मातृभूमि को मेरा,
शत्–शत् प्रणाम।।

दिव्या ढीम्मर (हिन्दी शिक्षिका)

वर्तमान में हिन्दी भाषा

हिन्दी भाषा का महत्व कितना?
समाज कब समझेगा उनका मूल्य।

राष्ट्रभाषा के नाम पर मेले,
वैसे अंग्रेजी में करते हैं टोक।

पूरे साल गुरु और चेले,
एक दिन होता है हिन्दी के नाम।

जो मनाया जाता है धूमधाम से हिन्दी दिवस,
इससे एक बात तो जाहिर होती है,

इंटरनेट पर लोगों का हिन्दी में रुझान,
पहले तो ये जरूरी है,
भाषा का संबंध भूमि और भावना से होता है।
अपनी आवश्यकता के लिए होता है भाषा का प्रयोग।

हिन्दी का एक दीप जलाएँ सभी को हो ज्ञान,
हिन्दी को बढ़ाने में सहयोग करें,
हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

सबसे उत्तम और सरल भाषा है,
हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा है।

पटेल गीता (हिन्दी-शिक्षिका)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

अखियों की भाषा

अखियाँ मेरी, गुमशुम
खो गये सपने सुहाने

पलक करे दुआ
मेरी अखियों की खातिर

अखियों की मुस्कान थी प्यारी-प्यारी
जादू था मुस्कान भरी भाषा में,

सुने उसकी भाषा को जो,
वो रोक न पाएँ खुद को,

अमीर हो या गरीब,
वो सबकी सहेली थी

दो दिलो को जोड़ती,
नन्ही सी कली समान थी,

आज खो गई, दिलों को जोड़ती,
अखियों की मुस्कान भरी भाषा,

जो थी सबकी सहेली,
आज बनी एक पहेली,

खो गये सपने सुहाने,
पलक करे दुआ,

मेरी अखियों की खातिर,
मेरी अखियों की खातिर।

वर्षा कुक्ना (हिन्दी शिक्षिका)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मैं तो चला इंसान की खोज में

दुनिया की चमचमाती रोशनी में मैने देखा खोया हुआ बुझा हुआ इंसान,
अरे! देखो जिन्होंने अपने ज्ञान के बल से बनाया
यह रोशनी खुद दिखता है, असहाय और परेशान।

सोचते-सोचते दिन गए, रात बीते, बीता महीना और साल
आज मैं खुद को देखता हूँ, तो लगता है यह समझना है बड़ा कठिन,

इंसान बनाने के ख्वाब में पढ़ी अनेकों किताब और जर्नल (पत्रिकाएँ)
हर पल में महसूस हुआ इंसान बनाना काम नहीं इतना आसान।

पहले लगता था कि इंसान तो सिर्फ होते हैं पढ़ने और पढ़ाने में,
मगर सच्चे इंसान तो बनते हैं सही मार्ग दिखलाने में।

बाबा ने कहा है कि सच्ची श्रद्धा से बनते हैं सच्चे इंसान,
ये इंसान अपने दम पर बनाते हैं अपना देश महान।

महान देश में होते हैं न जाने कितने सच्चे मार्गदर्शक,
मैं तो बहुत गर्व महसूस करता हूँ कि मैं हूँ आज एक शिक्षक,

अच्छे शिक्षक वे होते हैं जो हर अज्ञानी विद्यार्थी को बनाते हैं विद्वान,
मैं तो बस देखता हूँ और महसूस करता हूँ कि मेरा कार्य है कितना महान।

इस महानता को करता हूँ हर दिन सलाम और नमन,
यह प्रार्थना मेरी ईश्वर को शक्ति दो मुझे ताकि मैं बाँट सकूँ जीवन बनाने का ज्ञान।

माँ–बाप देते हैं सिर्फ बच्चे को जन्म,
हर बच्चे को आदर्श नागरिक बनाना होता है हर शिक्षक का धर्म।

आओ जाग पड़ो नवयुवकों देश में लाओ नवप्रभात,
शिक्षक बनो, अध्यापक बनो, गुरु बनो, आचार्य बनके निर्माण करो सोने का भारत।

बिभूति नारायण बिस्वाल
(प्राचार्य)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

राज्य स्तरीय हिन्दी महोत्सव–एक अवलोकन

वर्ष – २०१०

वर्ष – २०११

वर्ष – २०१२

वर्ष – २०१३

वर्ष – २०१४

वर्ष – २०१५

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गणेश वड सिसोद्रा , ने.हा.–८, नवसारी

दूरभाष : (02637) 291030, मो. 96012 61085

Website : www.sssvn.edu.in